सरदार पटेल इस्टी0 ऑफ साइन्स एण्ड टेक्नो0 महाविद्यालय मोहरीपुर, गोरखपुर

(पूर्व विश्वविद्यालयी परीक्षा– 2020)

समय – 3 घंटा | बी0ए0– प्रथम वर्ष : हिन्दी साहित्य | पूर्णांक – 100

प्रश्न पत्र – द्वितीय (आधुनिक काव्य)

नोट – इस प्रश्न–पत्र के तीन खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड से निर्देशानुशार उत्तर दीजिए।

खण्ड – (अ)

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्ही तीन की 200 – 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) बस मैंने इसका बाह्य– मात्र ही देखा,
दृढ हृदय न देखा, मृदुल गात्र ही देखा,
परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा
इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा।
युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी
"रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी"।

(ख) उषा सुनहले तीर बरसाती, जय लक्ष्मी सी उदित हुई।
उधर पराजित कालरात्रि भी जल में अन्तर्निहित हुई।
वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का आज लगा हँसने फिर से,
वर्षा बीती, हुआ सृष्टि मे शरद – विकाश नये सिरे से।

(ग) मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती,
दिखलाती फिर विस्मृति के अगणित मीठे सपने,
अर्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ जाता अनुराग
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड.ता तब एक विहाग।

(घ) छोड. द्रुमो की मृद छाया,
तोड. प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?
भूल अभी से इस जग को!

(ड़) यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर काल प्रवाहिनी बन जाय
तो हमें स्वीकार है वह भी। उसी मे रेत होकर
फिर छनेंगे हम । जगेंगे हम। कही फिर पैर टेकेंगे।

Scanned by CamScanner

कही फिर खड.ा होगा नये व्यक्तित्व का आकार।
मात्र, उसे फिर संस्कार तुम देना।

(च) खुल गयी है शुभ्र मन की ऑख
खुल गयी है चेतना की पॉख
प्राण की अन्तःशिला पर आज पहली बार
जागकर करूणा उठी है कर मृदुल झंकार।

(छ) असफलता का धुल कचरा ओढे हूँ
इसलिए कि वह चक्करदार जीनों पर मिलती है
छल–हृदय धन के
किन्तु में सीधी–साधी पटरी–पटरी दैड.ा हूँ
जीवन की।
फिर भी मैं अपनी सार्थकता से खिन्न हूँ
निज से अप्रसन्न हूँ
इसलिए कि जो है उससे बेहतरबेहतर चाहिए
पूरी दुनिया सु करने के लिए मेहतर चाहिए।

खण्ड – (ब)

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 600–600 शब्दों में दीजिए।

2. "मैथिलीशरण गुप्त ने चित्रकूट सभा के माध्यम से कैकेयी के पश्चाताप का मार्मिक वर्णन किया है" इस कथन के आलोक मे कैकेयी के चत्रि का सोदाहरण उद्धाटन कीजिए।

3. छायावादी काप्य की दृष्टि से 'आशा सर्ग' की समीक्षा कीजिए।

4. "निराला छायावाद के सर्वाधिकार प्रगतिशील कवि के रूप में जाने जाते है।" इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

5. "प्रकृति प्रेम और सौन्दर्य " पन्त की कविता का मुख्य विषय है, इस कथन की व्याख्या कीजिए।

6. प्रयोगवादी अज्ञेय को व्यक्ति की स्वतन्त्रता ही अभीष्ट है। इस कथन से आप कहॉ तक सहमत है।

7. मुक्तिवोध की काव्यगत विशेषताओ का विवेचना कीजिए।

8. 'कलिंग विजय' कविता युद्ध की व्यर्थता का उद्घोष करती हैं।' इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।

खण्ड – (स)

9. निम्नलिखित में से किन्हीं पॉच प्रश्नों के उत्तर लगभग 100–100 शब्दो में मे दीजिए।

(क) प्रियप्रवास''.की भाषा की विशेषताएं लिखिए।

(ख) बच्चन की कविताओं की विशेषताएं बताइए।

(ग) केदारनाथ अग्रवाल के प्रकृति– चित्रण की विशेषताएं बताइए।

(घ) रघुवीर सहाय की कविता "अकाल" का कथ्न निरूपित कीजिए।

(ड़) श्रीकान्त वर्मा की काव्य भाषा पर विचार कीजिए।

(च) भवानी प्रसाद मिश्र की काव्यगत विशेषताएं बताइए।

Scanned by CamScanner